पाल साम्राज्य: राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कला-संस्कृति

भाग:-2

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सा।।।हरसा

प्रशासन और राजकाज

इस समय राजा सभी मामलों के केंद्र में था. वह प्रशासन के सशस्त्र बलों का भी प्रमुख होता था. वह एक शानदार दरबार लगाता था. उदाहरण के लिए धर्मपाल ने कन्नौज पर अधिकार कर एक शानदार दरबार लगाया जिसमें पंजाब, पूर्वी राजस्थान आदि के अधीनस्थ शासकों ने भाग लिया.

न्याय व्यवस्था भी राजा के जिम्मे में था. दरबार राजनीति एवं न्याय के आलावा सांस्कृतिक जीवन का भी केंद्र था. नर्तकियां एवं कुशल संगीतकार भी दरबार में रहते थे.

राजा का पद सामान्यतः वंशानुगत होता था. राजा भारी-भरकम उपाधियाँ धारण कर अन्य शासकों में श्रेष्ठ होने का दावा करते थे.

राजा को सलाह देने के लिए कई मंत्री होते थे. सामान्यतः यह पद भी पुश्तैनी ही होता था. मंत्रियों में से किसी एक को अग्रणी माना जाता था और राजा उस पर अन्य मंत्रियो के मुकाबले अधिक निर्भर था. मंत्री पद के पुश्तैनी होने के कारण मंत्री बहुत शक्तिशाली हो जाता था.

सम्राज्य की सुरक्षा और प्रसार की दृष्टि से भारे भरकम सशस्त्र बल का गठन किया गया था. इस सम्बन्ध में अरब सौदागर सुलेमान के वृतांत से भी जानकारी मिलती है की पाल शासकों के पास विशाल सुसंगठित पैदल और घुड़सवार सेनाएं थी तथा बड़ी संख्या में जंगी हाथी थे. इनकी नौसेनाएं होने का भी पता चलता है.

पैदल सेना में नियमित और अनियमित दोनों तरह के सैनिक होते थे. नियमित सैनिक पुश्तैनी होते थे तथा कभी कभी देश के विभिन्न भागों मालवा, खस (असम), लाट (दक्षिण गुजरात), कर्नाटक आदि से इन्हें भर्ती किये जाते थे.

पाल साम्राज्य में प्रत्यक्ष शासित क्षेत्र भुक्ति, मंडल या विषय और पत्तल में विभाजित था. भुक्ति को प्रान्त, मंडल या विषय को जिला और पत्तल को जिला से छोटी इकाई कहा जा सकता है. प्रान्त अर्थात भुक्ति का अधिपति उपरिक, और जनपद अर्थात मंडल या विषय का अधिपति विषयपति कहलाता था. सभी से अपनी क्षेत्र में भूराजस्व जमा करने और सेना की सहायता से कानून व्यवस्था बनाये रखने की आशा की जाती थी.

इस काल में छोटे सरदारों की संख्या बढ़ी. उन्हें सामंत या भोगपति कहा जाता था और उनके अधीन अनेक गाँव होते थे. विषयपति और इन छोटे सरदारों का आपस में हेर-फेर होता था और आगे चलकर दोनों के लिए सामंत शब्द का प्रयोग होने लगा.

इन क्षेत्रीय विभाजनों के नीचे गाँव होते थे. यह प्रशासन की बुनियादी इकाई था. इसका प्रशासन मुखिया और लेखाकार द्वारा चलाया जाता था, जिसमें गाँव के बुजुर्गों जिन्हें ग्राम महत्तर कहा जाता था की सहायता प्राप्त होती थी.